सैनिक मित्र

मासिक पत्रिका

संवाद

सितम्बर, 2021

VOLUME - 01 | ISSUE - 02

राष्ट्र रक्षा न समं पुण्यम्

नायक जदुनाथ सिंह

वीरता की विरासत

अफगानिस्तान की दुर्दशा

सेना और सरकार जिम्मेदार

महिला सशक्तिकरण

भारतीय सेना में एक नये अध्याय का उदय

भारतीय सेना में महिला सशक्तिकरण का एक नया अध्याय

1992 में भारत में महिला सशक्तिकरण का एक नया अध्याय लिखा गया जब सेना में भारतीय महिलाओं के लिए अपने द्वार खोल दिए गये। 1993 में महिलाओं के पहले बैच को भारतीय सेना में कमीशन मिला। इससे पहले महिलाओं की केवल मेडिकल कोर में ही भर्ती की जाती थी। स्पेशल एंट्री स्कीम के अंतर्गत हर बैच में 25 महिलाओं को चुना गया और उनको 6 महीने के प्रशिक्षण के बाद विभिन्न कोर में कमीशन दिया गया।

महिलाओं को कमीशन के समय 5 साल के कॉन्ट्रैक्ट पर रखा गया और जब पहले बैच के 5 साल पूरे हुए तब सेना ने उन्हें यह अवसर प्रदान किया कि वह चाहे तो अपना कॉन्ट्रैक्ट 5 साल के लिए और बढ़ा सकते हैं। 10 साल की समाप्ति पर सेना ने उन्हें 4 साल और सेवा करने का मौका दिया परंतु 14 साल की सर्विस के बाद सेना ने उन्हें सेना निवृत्त कर दिया और उन्हें स्थायी कमिशन का विकल्प नहीं दिया गया।

यहीं से महिलाओं का सेना में स्थायी कमिशन प्राप्त करने का संघर्ष शुरू हुआ। 2006 में बबीता पूनिया ने दिल्ली हाईकोर्ट में याचिका दायर की और मांग की कि महिलाओं को स्थायी कमिशन दिया जाए। दिल्ली हाईकोर्ट ने 2010 में महिलाओं के हित में फैसला सुनाते हुए कहा कि महिलाओं को स्थायी कमिशन दिया जाना चाहिए। परंतु सेना सुप्रीम कोर्ट में इस फैसले के विरुद्ध लड़ाई लड़ने के लिए चली गई।

सेना ने सुप्रीम कोर्ट में इसके विरुद्ध एक याचिका दायर कर दी। 2010 में सेना ने शिक्षा विभाग में महिलाओं को स्थायी कमिशन देने का फैसला स्वीकार किया परंतु बाकी किसी भी कोर में उन्हें स्थायी कमिशन देने से मना कर दिया। 2010 से 2020 तक यह लड़ाई सुप्रीम कोर्ट में लड़ी गई और फरवरी 2020 में सुप्रीम कोर्ट ने एक ऐतिहासिक फैसला सुनाया, जिसके अंतर्गत उसने सेना को आदेश दिए कि वह महिलाओं को स्थायी कमिशन प्रदान करें। इस फैसले के अंतर्गत सेना को 3 महीने में महिलाओं को स्थायी कमिशन देना था। परंतु 2020 में सेना फिर से सुप्रीम कोर्ट के समक्ष खड़ी हुई और यह याचना की कि इस आदेश को लागू करने के लिए और समय चाहिए। परंतु सुप्रीम कोर्ट ने उनकी इस याचना को रद्द कर दिया और आदेश दिया कि तुरंत महिलाओं को स्थायी कमिशन किया जाए।

स्थायी कमिशन का मतलब होता है कि एक अफसर सेना में तब तक काम कर सकता है जब तक उस की सेवानिवृत्ति की उम्र नहीं होती और उसे सेवानिवृत्ति के बाद पूरी पेंशन मिलती है। स्थायी कमिशन अफसरों को आइसी नंबर दिया जाता है, आइसी का फुल फॉर्म होता है इंडियन कमीशन। महिलाएं सुप्रीम कोर्ट में इसके लिए लड़ रही है कि उन्हें भी आइसी नंबर दिया जाए और सेवानिवृत्ति की उम्र तक सेना में सेवा करने का मौका दिया जाए।

सुप्रीम कोर्ट के फैसले के तहत सेना में महिलाओं को आईसी नंबर देने की प्रक्रिया शुरू की और इसके अंतर्गत उन्होंने एक विशेष बोर्ड नियुक्त किया गया जिसे यह कार्य सौंपा गया की जितनी भी महिलाएं 2020 में सेना में तैनात हैं, उनका मूल्यांकन किया जाए कि क्या उन्हें सेना की पॉलिसी के अंतर्गत स्थायी कमिशन दिया जा सकता है? इस बोर्ड के गठित होने के परिणाम स्वरूप 615 में से अब तक 424 महिलाओं को स्थायी कमिशन प्रदान कर दिया गया है।

एनडीए में महिलाओं के भर्ती के लिए दरवाजे खोल दिए गए हैं और नवंबर 2021 में होने वाली परीक्षा में लड़कियां भी बैठ पाएंगी।

इंडियन आर्मी के सिलेक्शन बोर्ड ने कॉर्प्स ऑफ सिग्नल्स, कॉर्प्स ऑफ इलेक्ट्रॉनिक्स एंड मैकेनिकल इंजीनियर (EME) और कॉर्प्स ऑफ इंजीनियर्स में सर्विस दे रहीं 5 महिला ऑफिसर्स को कर्नल रैंक पर प्रमोट किया है। यह पहली बार है जब इन ब्रांच में महिला ऑफिसर्स को कर्नल पद पर प्रमोशन की मंजूरी मिली है।

ये 5 महिला अफसर बनीं कर्नल

जिन 5 ऑफिसर्स को प्रमोट किया गया है उनमें कॉर्प्स ऑफ सिग्नल्स से लेफ्टिनेंट कर्नल संगीता सरदाना, कॉर्प्स ऑफ EME से लेफ्टिनेंट कर्नल सोनिया आनंद और लेफ्टिनेंट कर्नल नवनीत दुग्गल और कॉर्प्स ऑफ इंजीनियर्स से लेफ्टिनेंट कर्नल रीनू खन्ना और लेफ्टिनेंट कर्नल रिचा सागर शामिल हैं। तय ब्रांच के अलावा दूसरी ब्रांच में महिला ऑफिसर्स को कर्नल पद पर प्रमोट करना बड़ा कदम माना जा रहा है।

—कैप्टन शिखा सक्सेना

सेना और सरकार ही हैं जिम्मेवार अफगानिस्तान की दुर्दशा के लिए

कर्नल
शिवदान सिंह

अप्रैल 2021 में जब अमेरिका के राष्ट्रपति जोए बिडेन ने अपनी सेनाओं को अफगानिस्तान से बुलाने की घोषणा की है तब से विश्व में सब कह रहे हैं कि अमेरिका ने अफगानिस्तान को बेसहारा छोड़ दिया है। यह कथन तब तो ठीक होता यदि अमेरिका 2001 में तालिबान को हराकर उसी समय अफगानिस्तान छोड़कर चला जाता तो कहा जा सकता था कि अफगानिस्तान की सेना इतनी जल्दी संगठित नहीं हो सकती और अफगानिस्तान को इस समय छोड़ना उचित नहीं होगा। परंतु पूरे 20 साल के बाद भी बेसहारा वाला कथन सत्य नहीं है ! इन 20 सालों में एक स्वतंत्र और गणतंत्र देश को राष्ट्रीय सुरक्षा और आर्थिक रूप से स्वयं को अपनी सुरक्षा के लिए मजबूत बना लेना चाहिए था, परंतु अफगानिस्तान में ऐसा कुछ नहीं हुआ। बल्कि अफगानिस्तान को विदेशी सुरक्षा की एक प्रकार से आदत ही पड़ गई।

1978 से 1989 तक रूसी सेनाओं ने तथा 2001 से 2021 तक अमेरिकी सेनाओं ने इस देश की सुरक्षा की इस प्रकार पूरे 43 साल तक अफगानिस्तान की सुरक्षा विदेशी सेनाएं करती रही और स्वयं देश की सेना का इसमें कोई योगदान नजर नहीं आया जबकि होना तो यह चाहिए था की अफगानिस्तान की सरकार और उसकी सेना को अपने आप को पुनर्निर्माण करके आधुनिकतम स्थिति में लाना चाहिए था! क्योंकि उसको इस दौरान विश्व के सबसे प्रगतिशील देश अमेरिका का पूर्ण सहयोग और सहायता उपलब्ध थी। परंतु ऐसा हुआ नहीं, आज पूरे विश्व के लिए बांग्लादेश एक उदाहरण बन गया है। लंबे दमन के बाद भारत की सहायता से बांग्लादेश 1971 में आजाद हुआ और इसके फौरन बाद भारतीय सेना केवल 2 महीने में वहां से भारत में वापस आ गई। परंतु फिर भी बांग्लादेश की सरकार और वहां की सेना ने अपने आप को इतना मजबूत बनाया कि आज बांग्लादेश विश्व की एक उभरती हुई अर्थव्यवस्था और पूर्णतया सुरक्षित देश है जबकि ऐसा अफगानिस्तान में नहीं हुआ जिसके कारण आज अफगानिस्तान इस स्थिति में है।

अफगानिस्तान की स्थिति को तीन प्रकार से देखा जाना चाहिए। पहला विश्व की महाशक्तियों की आपसी प्रतिस्पर्धा। दूसरा अफगानिस्तान सरकार की व्यवस्था और भ्रष्टाचार तथा सेना की विफलता, और तीसरा अफगानिस्तान की स्थिति का दक्षिण एशिया और विश्व में प्रभाव। द्वितीय विश्व युद्ध के बाद विश्व में चारों तरफ शांति की कल्पना की जाने लगी। परंतु इसके बाद विश्व की दो उभरती महाशक्तियों में प्रतिस्पर्धा शुरू हो गई। इस प्रकार विश्व के ज्यादातर देश दो वर्गों में विभाजित हो गए, जिनमें यूरोप के और मध्य एशिया के कुछ देश अमेरिका के साथ और पूर्वी ध्रुव सोवियत संघ के साथ था। इसको शीत युद्ध का नाम भी दिया गया। अमेरिका ने अपने गठबंधन को मजबूत करने के लिए उत्तरी अटलांटिक सहयोग नीति जिसको नाटो के नाम से पुकारा जाता है बनाई और रूस ने 1955 में वारसा समझौता पर अपने सहयोगी देशों के साथ हस्ताक्षर किए। जैसा कि विदित है सोवियत संघ कम्युनिस्ट विचारधारा का समर्थक था इसी का प्रचार प्रसार वह अपने देशों में करता

सेना और सरकार ही हैं जिम्मेवार...

था उसी प्रकार अमेरिका अपनी नीतियों का प्रचार अपने देशों में करता था। इन दोनों शक्तियों के विचारों की भिन्नता के कारण विश्व में जगह–जगह युद्ध हुए जैसे वियतनाम, कोरिया विभाजन इत्यादि। इसी के चलते सोवियत संघ के पड़ोस में जब अफगानिस्तान में 1978 में सोवियत संघ समर्थित कम्युनिस्ट सरकार को वहां से हटा दिया गया तब इसको दोबारा पुनर्स्थापित करने के लिए सोवियत संघ ने अपनी सेना वहां पर भेजी जिसने विरोधियों को हराकर अपनी सरकार वहां पर स्थापित की। इसको देखते हुए अमेरिका ने अपनी प्रतिद्वंद्विता के कारण सोवियत संघ के इस कदम का विरोध करने के लिए अपने नाटो साथियों के द्वारा साथ रूसी सेना को अफगानिस्तान से भगाने के लिए पाकिस्तान से गठबंधन किया। इसके अनुसार पाकिस्तान अपने मदरसों से और देश के बेरोजगार नौजवानों को मुस्लिम कट्टरपंथी विचारधारा में तैयार करके अमेरिका को देगा, जिनको अमेरिका आतंकवाद में प्रशिक्षित करके उन्हें अफगानिस्तान में भेजेगा। इसके बदले में अपनी गलत नीतियों के कारण आर्थिक कठिनाइयों में आए पाकिस्तान को अमेरिका और सऊदी अरेबिया काफी मात्रा में धन उपलब्ध कराएंगे। रूसी सेना अफगानिस्तान में केवल शहरी क्षेत्रों तक सीमित थी वहीं पर पाकिस्तान से भेजे गए आतंकी तालिबान वहां के देहाती क्षेत्रों में अपनी पकड़ बनाते चले गए। आखिर में इनके हमलों से तंग आकर रूसी सेना को 1989 में अफगानिस्तान को छोड़ना पड़ा। इसके बाद 90 से लेकर 2001 तक अफगानिस्तान में तालिबान का शासन चला जिसमें उन्होंने तरह–तरह के अत्याचार वहां पर किए जिनके बारे में पूरा विश्व जानता है। इन के समय में अलकायदा जैसे आतंकवादी संगठन यहां पर तैयार हुए जिन्होंने 2001 में अमेरिका के विश्व व्यापार केंद्र पर हमला किया जिसके फलस्वरूप अमेरिकी सेनाओं ने दोबारा अफगानिस्तान में प्रवेश करके वहां पर चुनी हुई सरकार को स्थापित किया।

आंकड़ों से पता चल रहा है की 3 लाख संख्या वाली अफगानी सेना के साथ टैंक तोपें और आधुनिक हथियारों के साथ साथ हवाई सेना भी थी, जिसके द्वारा यह सेना किसी भी आतंकी संगठन का एक मच्छर की तरह सफाया कर सकती थी। परंतु ऐसा हुआ नहीं, क्योंकि अफगानिस्तान की सेना में 2001 के बाद जो भी सैनिक भर्ती हुए थे वे ज्यादातर तालिबानी ही थे। क्योंकि तालिबान ने अपनी सीधे टक्कर लेने की नीति के बदले में यह नीति अपनाई कि वे अपने लोगों को अफगानी सेना में प्रवेश कराकर सही समय पर इस सेना को अपने सामने समर्पण के लिए कहेंगे, और ऐसा ही हुआ। इस समय यह साफ हो चुका है कि अफगानिस्तान में तालिबान का शासन दुबारा से आ गया है। इसलिए विश्व को इनके प्रभाव के बारे में विचार करना चाहिए। 2001 में अमेरिका विश्व व्यापार केंद्र पर इन्हीं के शासनकाल में इतना बड़ा हमला पूरी तैयारी के साथ हुआ था। इसी प्रकार इस क्षेत्र में तैयार किए हुए आतंकी यूरोप और दक्षिण एशिया में चारों तरफ फैल गए थे जिन्होंने इन देशों में तरह–तरह की आतंकी घटनाओं को अंजाम दिया। फ्रांस में सरकार ने मुस्लिम कट्टरपंथियों पर तरह तरह के प्रतिबंध लगाए हैं क्योंकि इन कट्टरपंथियों को ज्यादातर प्रशिक्षण और विचारधारा तालिबान जैसे संगठनों से ही मिल रही थी। खासकर भारत में जहां पर मुस्लिम आबादी 22 करोड़ के करीब है वहां पर देश कि सुरक्षाबलों और इंटेलिजेंस एजेंसियों को इस प्रकार के आतंकी संगठनों पर ज्यादा नजर रखने की आवश्यकता है। क्योंकि यह सांप्रदायिकता की आड़ में तरह–तरह के आतंकी मंसूबों को पूरा करने के लिए अपनी विचारधारा का प्रचार करते हैं। जैसा कि कभी–कभी हमारे देश में देखने में आता है। हमारा देश एक उभरती हुई शक्ति है इसलिए इसे इस स्थिति से और ऊपर ले जाने के लिए देश के सब देशवासियों को केवल भारतीयता की भावना से अपनी राष्ट्रीय सुरक्षा के बारे में हर समय समर्पित रहना चाहिए और हमारा देश इस विषय में विश्व के लिए एक उदाहरण पहले भी रहा है और अभी भी रहेगा।

संदेश

आप के द्वारा प्रकाशित पत्रिका बहुत ही सराहनीय है और भविष्य में इस प्रकार प्रकाशित होती रहे। मेरा सूझाव हैं कि इस में सेना में भर्ती की जानकारी व शूरवीरों की कहानियां भी प्रकाशित करने का कष्ट करें।

कैप्टन रामेश्वर प्रसाद
१ध२३ प्रतापनगर, ब्यावर-३०५९०१
जिला अजमेर(राजस्थान)

सब कुछ है अपने हाथों में,
क्या तोप नहीं तलवार नहीं।
वह हृदय नहीं है पत्थर है,
जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं॥

एमडब्ल्यूओ
अवधेश कुमार
(रिटायर्ड)

वीरता की विरासत

नायक जदुनाथ सिंह
प्रथम बटालियन
राजपुत रेजिमेन्ट

यह एक ऐसे सैनिक की कहानी है जो देश के लिए जिया और मरा। जदुनाथ सिंह का जन्म 21 नवंबर 1916 को उत्तर प्रदेश के एक छोटे से गांव खजूरी में हुआ था। उनके माता–पिता, बीरबल सिंह राठौर और जमुना कंवर, गरीब किसान थे। उनका आठ बच्चों का एक बड़ा परिवार था। जदुनाथ ने चौथी कक्षा गांव के स्कूल से पास की। कुश्ती और शारीरिक गतिविधियों में अच्छा होने के साथ ही युवा जदुनाथ सक्रिय, धार्मिक और अनुशासित थे। 25 वर्ष की आयु में, वह फतेहगढ़ में राजपूत रेजिमेंट में शामिल हो गए। अपना प्रशिक्षण पूरा करने के बाद, उन्हें राजपूत रेजिमेंट की पहली बटालियन में तैनात किया गया था। उनके वरिष्ठ अधिकारियों ने उनमें नेतृत्व और साहस की चिंगारी देखी। वह द्वितीय विश्व युद्ध में लड़े। उनकी वापसी पर जदुनाथ को नाइक के पद पर पदोन्नत किया गया था, और उन्हें सैनिकों के एक वर्ग की कमान दी गई थी। सेना के हलकों में कहा जाता है कि जदुनाथ के बारे में अधिक जानकारी उपलब्ध नहीं है क्योंकि उन्होंने शादी नहीं की थी। लेकिन युद्ध नायक जदुनाथ के अवशेष वीरता और नेतृत्व के अतुलनीय गुणों की विरासत है जो हमारे देश के इतिहास के पन्नों से कभी नहीं मिटेगी।

युद्ध का रोष – 6 फरवरी 1948

भारत की आजादी के तुरंत बाद जम्मू और कश्मीर की रियासत भारत का हिस्सा नहीं बनना चाहती थी। लेकिन जम्मू–कश्मीर के तत्कालीन महाराजा के लिए सभी पहलुओं में आत्मनिर्भर बनना संभव नहीं था। जब पाकिस्तान के हमलावरों ने कश्मीर पर हमला किया तब जम्मू–कश्मीर के महाराजा भारत में शामिल होने के लिए सहमत हो गये क्योंकि उनके पास आक्रमणकारियों से लड़ने की कोई तैयारी नहीं थी।

भारत सरकार की ओर से राजपूत बटालियन को आक्रमणकारियों से लड़ने के लिए नौशेरा तक मार्च करने का आदेश दिया गया था। बटालियन को तीन दलों में बांटा गया था। उनमें से एक तंधार पर तैनात थी जो सबसे महत्वपूर्ण जगह थी क्योंकि उनमें से एक तंधार था, जिसे सबसे विशिष्ट रूप से स्थित कहा जाता है क्योंकि आक्रमणकारियों के पास तंधार को पार करने के अलावा कोई दूसरा रास्ता नहीं था। बटालियन 8 दिसंबर 1947 को वहां पहुंची थी। तंधार पोस्ट के नायक जदुनाथ को सूचना मिली कि पाकिस्तानी हमलावर हमले की योजना बना रहे हैं। उसके पास बहुत कम संसाधन और कुछ ही आदमी थे। ६ फरवरी १९४८ की सुबह थी, जदुनाथ ने उस धुंध और कोहरे के बीच देखा की हथियारों से लैस बहुत बड़ी संख्या में आक्रमणकारी आ रहे थे। उसने उठकर अपने सभी नौ आदमियों को इकट्ठा किया और उन्हें अपनी जगह संभालने की आज्ञा दी। हर तरफ से हमलावर आ रहे थे। वे तेज़ी से आगे बढ़ रहे थे। जदुनाथ और उसके आदमियों ने उन पर हथगोले फेंके, लेकिन वह काफी नहीं था। यह सेनानियों और हथियारों के समुद्र में एक चुटकी नमक की तरह था। यह दर्ज किया गया है कि एक समय में वे खाइयों में प्रवेश कर गए थे और आमने–सामने की लड़ाई हुई थी। युद्ध के प्रकोप के बीच, जदुनाथ की सेना के चार लोग घायल हो गए। हवलदार दया राम, एक गैर–कमीशन अधिकारी, मौके पर पहुंचे, अपनी जान जोखिम में डालकर उन्होंने मोर्टार से फायरिंग शुरू कर दी, लेकिन बहुत करीब से। इससे उन्हें और भारतीय सैनिकों को चोट लग सकती थी। लेकिन उनकी रणनीति ने वास्तव में भारतीय पोस्ट को एक बड़े विनाश से बचा लिया। जदुनाथ को गोली लगने से गंभीर चोटें आई थीं। वह खड़े होने और चलने में असमर्थ था। बहादुरी से उसने खुद को घसीटा, एक घायल सैनिक से एक बंदूक ली और तब तक लड़ाई लड़ी जब तक उसके पास कोई गोला–बारूद नहीं बचा। यह अलविदा नहीं कह रहा था। उसने आक्रमणकारियों से तलवार पकड़ी और तब तक लड़ता रहा जब तक कि उसे मार नहीं दिया गया। ये केवल उनकी बहादुरी की तस्वीरें नहीं हैं, बल्कि उनके एक नेता होने की भी तस्वीरें हैं; जदुनाथ की वीरता के कारनामों ने उनके आदमियों को तब तक लड़ने के लिए प्रेरित किया जब तक कि उन्होंने अपनी जान नहीं गंवाई। हम यह भी कह सकते हैं कि यह बहादुर सैनिकों की उनके नेता जदुनाथ को श्रद्धांजलि थी जिन्होंने आक्रमणकारियों से लड़ने में अतुलनीय साहस का प्रदर्शन किया। जदुनाथ ने अंतिम सांस तक आक्रमणकारियों को संभलने नहीं दिया। वीर जदुनाथ को मरणोपरांत परमवीर चक्र से सम्मानित किया गया।

वसुधैव कुटुंबकम भाव से हो रहा है राष्ट्र का निर्माण

बुलंदशहर में एक विद्यालय है मिलिट्री हीरोज इंटर कॉलेज जो कि सैदपुर गांव में बीवी नगर ब्लॉक के पास स्थित है। उस गांव में हर एक परिवार से कम से कम एक व्यक्ति सेना में सेवा कर रहा है और जब भी युद्ध का अवसर आया वहां के वीर सिपाहियों ने एक नई वीर गाथा लिखी जो सदैव हमारे युवाओं को प्रेरणा देती रहेगी। जब देश आजाद हुआ उसके तुरंत बाद इस गांव में सेना खुली भर्ती करवाया करती थी। जिस स्थान पर ये भर्तियां होती थी उसी स्थान पर आज मिलिट्री हीरोस स्कूल स्थित है। इस गांव में स्मारक बने हुए हैं जो उन वीर सैनिकों की बहादुरी की गाथाओं का जीवंत प्रमाण है। यहां की हर गली, हर घर वीरता की कहानी कहता है। यहां पर गांव के प्रवेश द्वार पर ही प्रथम विश्वयुद्ध व द्वितीय विश्व युद्ध में शहीद हुए वीरों के नाम अंकित हुए शिलालेख मिल जाएंगे। वहां पर उन सभी बहादुर सैनिकों के नाम अंकित है जिन्होंने अपना जीवन न्योछावर कर दिया। इंडो चाइना युद्ध और भारत पाकिस्तान युद्ध जैसे कि कारगिल में भी इस गांव के वीर सैनिकों को सेना ने साहस के लिए पुरस्कृत किया ।

पाकिस्तान और चीन जैसे पड़ोसियों की विस्तारवादी नीति से निबटने के लिए इजरायल की भांति हमारे भारत देश में भी सैनिक शिक्षा को स्कूलों में सभी के लिए अनिवार्य करने की जरूरत है। जिससे देश भक्त नागरिकों की फौज तैयार हो जो राष्ट्र निर्माण में अपना सहयोग दें व किसी भी अनहोनी से निपटने के लिए सदैव तैयार रहे। बुलंदशहर जनपद के गांव सदैव से ही देश के लिए उच्च स्तर के नागरिक, वीर बहादुर सैनिक पैदा करने में एक अनूठा कार्य करते रहे। इसी कड़ी में खानपुर कस्बे में कुछ किसानों ने मिलकर गांव नगला आलमपुर में जो कि खानपुर सियाना मार्ग पर स्थित है एक उत्कृष्ट शिक्षण संस्थान वीरांगना अवंती बाई महाविद्यालय की स्थापना हाल ही में की। जहां पर सेना में जाने के इच्छुक छात्रों को निशुल्क सहयोग दिया जाता है जिससे कि वह अपने सपनों को पूरा करते हुए देश सेवा में सहयोग कर सकें। अभी भी हमारे देश की जनसंख्या के अनुपात में हमारे पास सैनिक शिक्षण संस्थानों की कमी है। लेकिन सैनिक शिक्षा को अनिवार्य करने के बाद हमारे देश की तस्वीर को और तेज गति के साथ बदला जा सकता है व विश्व पटल पर हम वसुधैव कुटुंबकम का संदेश देते हुए अग्रणी भूमिका में आ सकते हैं ।

–विनोद राजपुत
वरिष्ठ पत्रकार

भारतीय सेना

भारतीय थल सेना

भारतीय थल सेना का मुख्यालय नई दिल्ली में स्थित हैं। चीफ ऑफ आर्मी स्टाफ (सीओएएस), समग्र रूप से सेना की कमान, नियंत्रण और प्रशासन के लिए उत्तरदायी है। सेना को 6 प्रचालन रत कमांडों (क्षेत्र की सेनाएं) और एक प्रशिक्षण कमांड में बांटा गया है, जो एक लेफ्टिनेंट जनरल के नियंत्रण में होती है, जो वाइस चीफ ऑफ आर्मी स्टाफ (वीसीओएएस) के समकक्ष होते हैं और नई दिल्ली में सेना मुख्यालय के नियंत्रण में कार्य करते हैं।

भारतीय नौ सेना

आधुनिक भारतीय नौ सेना की नीव 17वीं शताब्दी में रखी गई थी, जब ईस्ट इंडिया कंपनी ने एक समुद्री सेना के रूप में ईस्ट इंडिया कंपनी की स्थापना की और इस प्रकार 1934 में रॉयल इंडियन नेवी की स्थापना हुई। भारतीय नौ सेना का मुख्यालय नई दिल्ली में स्थित है और यह मुख्य नौ सेना अधिकारी – एक एडमिरल के नियंत्रण में होता है। भारतीय नौ सेना 3 क्षेत्रों की कमांडों के तहत तैनात की गई है, जिसमें से प्रत्येक का नियंत्रण एक फ्लैग अधिकारी द्वारा किया जाता है। पश्चिमी नौ सेना कमांड का मुख्यालय अरब सागर में मुम्बई में स्थित है; दक्षिणी नौ सेना कमांड केरल के कोच्चि (कोचीन) में है तथा यह भी अरब सागर में स्थित है; पूर्वी नौ सेना कमांड बंगाल की खाड़ी में आंध्र प्रदेश के विशाखापट्नम में है।

भारतीय वायु सेना

भारतीय वायु सेना की स्थापना 8 अक्तूबर 1932 को की गई और 1 अप्रैल 1954 को एयर मार्शल सुब्रोतो मुखर्जी, भारतीय नौ सेना के एक संस्थापक सदस्य ने प्रथम भारतीय वायु सेना प्रमुख का कार्यभार संभाला। समय बितने के साथ भारतीय वायु सेना ने अपने हवाई जहाजों और उपकरणों में अत्यधिक उन्नयन किए हैं। 20वीं शताब्दी के अंतिम दशक में भारतीय वायु सेना में महिलाओं को भी शामिल किया गया है।

राष्ट्रीय रक्षा अकादमी : NDA

यह पुणे के निकट खड़कवासला में स्थित है। भारत में एक संयुक्त सेवा अकादमी शुरू करने का विचार वर्ष 1945 में रखा गया था। इसकी स्थापना तीनों सेवाओं के भावी अधिकारियों के लिए संयुक्त मूलभूत प्रशिक्षण उपलब्ध कराने के लिए की गई थी। अतः 15 दिसंबर, 1948 को क्लीमेंट टाउन, देहरादून में संयुक्त सेवा शाखा शुरू की गई। वर्ष 1954 में उसे क्लीमेंट टाउन से खड़कवासला में स्थानांतरित कर दिया गया और जनवरी 1955 में राष्ट्रीय रक्षा अकादमी ने अपना पहला सत्र प्रारंभ किया। राष्ट्रीय रक्षा अकादमी का पाठ्यक्रम 10+2+3 राष्ट्रीय शिक्षा प्रणाली पर आधारित है, जिसे जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, दिल्ली द्वारा बी. ए. अथवा बी. एस. सी. की डिग्री के समकक्ष मान्यता प्राप्त है।

यहां तीनों सैन्य सेवाओं यानी भारतीय सेना, नौसेना और वायु सेना के कैडेट एक साथ संबंधित सेवा का प्रशिक्षण लेते हैं। इस अकादमी में भारत व मित्र देशों के युवाओं को सैन्य प्रशिक्षण दिया जाता है। यहां के प्रशिक्षित युवाओं ने उच्च मानक स्थापित कर पूरे भारतवर्ष को गौरवान्वित किया है। यही कारण है कि राष्ट्रीय रक्षा अकादमी में प्रवेश पाना आज भी युवाओं की पहली पसंद है, लेकिन यहां प्रवेश पाना इतना आसान नहीं है। एनडीए में आवेदकों का चयन हर वर्ष संघ लोक सेवा आयोग द्वारा आयोजित एक लिखित परीक्षा के माध्यम से किया जाता है। इसके बाद सेवा चयन बोर्ड द्वारा व्यापक साक्षात्कार जिसमें सामान्य योग्यता, मनोवैज्ञानिक परीक्षण, टीम कौशल, सामाजिक कौशल व चिकित्सा परीक्षणों के बाद अंतिम मेरिट के आधार पर सूची तैयार की जाती है। यह प्रक्रिया पूरी होने के बाद अभ्यर्थियों को प्रवेश मिलता है। एनडीए प्रवेश परीक्षा देने के लिए अभ्यर्थी की आयु कम–से–कम साढे 16 वर्ष व अधिकतम 19 वर्ष होनी चाहिए। वायु सेना और नौसेना के लिए कक्षा 12 भौतिकी व गणित विषय के साथ उत्तीर्ण होनी चाहिए व भारतीय सेना के लिए किसी भी विषय से कक्षा 12 उत्तीर्ण होनी चाहिए। यहां 3 वर्ष का सैन्य प्रशिक्षण दिया जाता है।

–डा. कोविद कुमार
सहायक आचार्य, श्री खुशाल दास
विश्वविद्यालय, – हनुमानगढ़

कलम से नमन...

वीर जवानों के हौंसले को नमन
'फिदा कर जान अपनी तुम देश पर,मुस्कराते हो।
सांस थमती गई फिर भी वतन के गीत गाते हो।।
'शीश कट जाये सरहद पर वतन के आन के खातिर।
हिमालय का ना सर झुक पाए ऐसी कसमें खाते हो।।
'हो लथपथ खून से काया कदम ना रुकने देते हो।
ए मेरे वीर जवानों तुम ये जज्बा कहां से लाते हो।।
'भगवत ज्ञान तुम ही हो चारो धाम तुम ही हो।
जन गण गान तुम ही हो देश अभिमान तुम ही हो।।
'तुम्हारे त्याग को सजदा बंदगी करती चरणों में।
ये तन से प्राण जब निकले रहूं मैं भी तिरंगे में।।

वंदेमातरम जयहिंद

–कवयित्री अंजलि शिशौदिया

रज्जू भैया सैनिक विद्या मंदिर

खण्डवाया, शिकारपुर स्थित रज्जू भैया सैनिक विद्या मंदिर में 15 अगस्त को आजादी का अमृत महोत्सव धूमधाम से मनाया गया और विद्यालय के प्रधानाचार्य ने बताया कि स्कूल में 4 सितंबर, शनिवार से छात्रों का आगमन शुरू हो जायेगा तथा 6 सितंबर, सोमवार से व्यक्तिगतरूप से विधिवत् कक्षाओं का संचालन किया जाएगा।

विद्यालय के प्रधानाचार्य ने बताया कि विद्यालय परिसर में कोरोना महामारी से बचाव के लिए शासन के निर्देशानुसार कोरोना गाइडलाईन का पूर्णतः पालन किया जाएगा।

विद्यालय के सचिव श्री डीके शर्मा, विद्यालय के डायरेक्टर कर्नल एसके सिंह व राष्ट्रीय पर्यावरण विद और स्वतंत्रता दिवस की मुख्य अतिथि श्री विजय पाल बघेल के द्वारा ध्वजारोहण किया गया

राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ, पश्चिम उत्तर प्रदेश एवं उत्तराखण्ड के क्षेत्र कार्यकारिणी सदस्य श्री गंगाराम जी द्वारा मार्गदर्शन

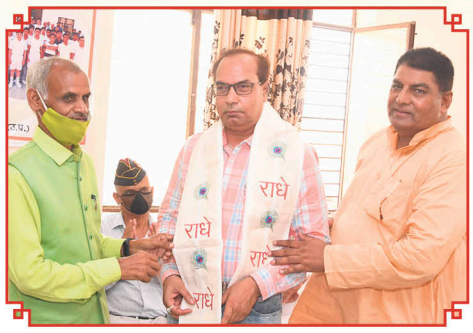

विद्यालय के सचिव श्री डीके शर्मा व ग्रीन मैन की उपाधि से प्रख्यात श्री विजय पाल बघेल जी के द्वारा श्री सुभाष चंद गुप्ता शिक्षाविद तथा आजीवन सदस्य के नाते सम्मान किया गया

विद्या भारती के क्षेत्रीय अध्यक्ष श्रीमान मनवीर सिंह जी श्री राजपाल जी संरक्षक RBSVM व विद्यालय के प्रबंधक श्री डीके शर्मा जी द्वारा डॉक्टर विनोद सिंह जी का स्वागत किया गया

ग्रीन मैन श्री विजय पाल जी बघेल विद्या भारती के क्षेत्रीय अध्यक्ष श्री मनवीर सिंह जी व विद्यालय के संरक्षक श्री राजपाल जी द्वारा वृक्षारोपण का कार्यक्रम किया गया

स्वतंत्र देश के उद्बोधन को सुनते गणमान्य व्यक्ति

आपको हमारा यह अंक कैसा लगा अपनी राय एवं अपने सुझाव हमें निम्न ई–मेल smsamvad@gmail.com पर अवश्य भेजें।

सम्पादकः प्रमोद कामत, **उप–सम्पादकः** दीपक स्वरूप
संरक्षकः डा. हेमेन्द्र सिंह यादव, **सलाहकार मण्डलः** रवि पाराशर एवं विनोद राजपूत